पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय का लोकार्पण
बहुमुखी प्रतिभा के धनी और एकात्म मानववाद के प्रेणता थे पं0 दीनदयाल - राज्यपाल

लखनऊः 29 दिसम्बर, 2016

इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान, गोमती नगर में आज एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय' तथा पं0 दीनदयाल पर एक डाक टिकट का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने की तथा मुख्य अतिथि के तौर पर श्री अमित शाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी सहित लखनऊ के महापौर डा0 दिनेश शर्मा, सम्पूर्ण वाङ्मय के सम्पादक डा0 महेश चन्द्र शर्मा, सम्पादक मण्डल के सदस्य श्री अच्युतानन्द मिश्र, राष्ट्रधर्म के सम्पादक श्री ओम प्रकाश पाण्डेय, वरिष्ठ स्तम्भकार एवं विधान परिषद के सदस्य श्री हृदय नारायण दीक्षित एवं अन्य विशिष्टजन उपस्थित थे। 15 खंडों के दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय के 13वें खंड की भूमिका राज्यपाल श्री राम नाईक ने लिखी है।

राज्यपाल ने लोकार्पण समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि यह सुखद संयोग है कि 1916 में 29 दिसम्बर को लखनऊ में राष्ट्रीय कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ था, जिसमें भारतीय असंतोष के जनक लोकमान्य तिलक ने अपने भाषण में कहा था कि 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे प्राप्त करूंगा' और आज 29 दिसम्बर के ही दिन लखनऊ में 'दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय' और उन पर डाक टिकट का भी लोकार्पण हुआ।

श्री नाईक ने कहा कि गौरवशाली भारतीय परम्परा के प्रतीक एवं राष्ट्रवादी भावना जगाने वाली 20वीं सदी के महान मनीषियों में पं0 दीनदयाल का नाम बडे सम्मान के साथ लिया जाता है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी और एकात्म मानववाद के प्रणेता थे, जिन्होंने अपना सारा जीवन राष्ट्रहित के लिये समर्पित कर दिया था। पं0 दीनदयाल एक सामान्य व्यक्ति, कुशल संगठक और मौलिक विचारक होने के साथ-साथ समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, राजनीति विज्ञानी एवं दार्शनिक भी थे। राज्यपाल ने पं0 दीनदयाल उपाध्याय के उस भाषण के कुछ अंश भी पढ़कर सुनायें, जिसमें उन्होंने कहा था कि 'हमारा लक्ष्य अंत्योदय है और हमारा मार्ग परिवर्तन है।'

राज्यपाल ने कहा कि पं0 दीनदयाल ने अपने विचारों से लोगों को जोड़ा। एक राजनेता देश के लिये कैसे विचार करता है, यह समझने की आवश्यकता है। पं0 दीनदयाल में प्रेरणा देने की अद्भुत शक्ति थी। वे लगन और सम्पर्ण के साथ काम करने की मिसाल हैं। संगठन बनाने और उसे चलाने की उनमें अद्वितीय क्षमता थी। स्व0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने उनके इस गुण को देखते हुये कहा था कि 'मुझे दो दीनदयाल दे दो, मैं भारत को बदल दूंगा।' राज्यपाल ने कहा कि पं0 दीनदयाल ने अंत्योदय में जो अपने विचार व्यक्त किये हैं उससे प्रेरणा प्राप्त करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि उनके शब्द हमारे लिये मार्गदर्शक हैं और उनके दिखाये रास्ते पर चलने की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि श्री अमित शाह ने कहा कि अंत्योदय को चरितार्थ करने की दृष्टि से भारत सरकार द्वारा पं0 दीनदयाल उपाध्याय के शताब्दी वर्ष का आयोजन किया जा रहा है। दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय हर क्षेत्र में काम करने वालों के लिये गीता से कम उपयोगी नहीं है। पं0 दीनदयाल का जीवन स्व के लिये नहीं बल्कि देश के लिये समर्पित था। वे युगदृष्टा थे और उन्होंने एकात्म मानववाद और अंत्योदय के माध्यम से नयी दृष्टि दी। पं0 दीनदयाल का मानना था कि अंतिम पायदान में खडे व्यक्ति के विकास से ही देश का विकास होगा। उन्होंने कहा कि देश के विकास का संकल्प लें, यही पं0 दीनदयाल के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वरिष्ठ स्तम्भकार एवं विधान परिषद सदस्य श्री हृदय नारायण दीक्षित ने कहा कि पं0 दीनदयाल केवल एक व्यक्ति का नाम नहीं है बल्कि एक विचार है। प्रमाणिक चिन्तक के रूप में उनका नाम लिया जाता है। उन्होंने प्राचीन दृष्टि और समग्र विचार को पुनर्जीवित करने का कार्य किया। पं0 दीनदयाल तत्वदृष्टा थे, जिन्होंने आर्थिक लोकतंत्र का विचार रखा। उन्होंने कहा कि पं0 दीनदयाल ने देश के सामने शाश्वत विचार रखे।

समारोह में सम्पादक श्री महेश चन्द्र शर्मा ने कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत की तथा महापौर लखनऊ डा0 दिनेश शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अंजुम/ललित/राजभवन (496/62)

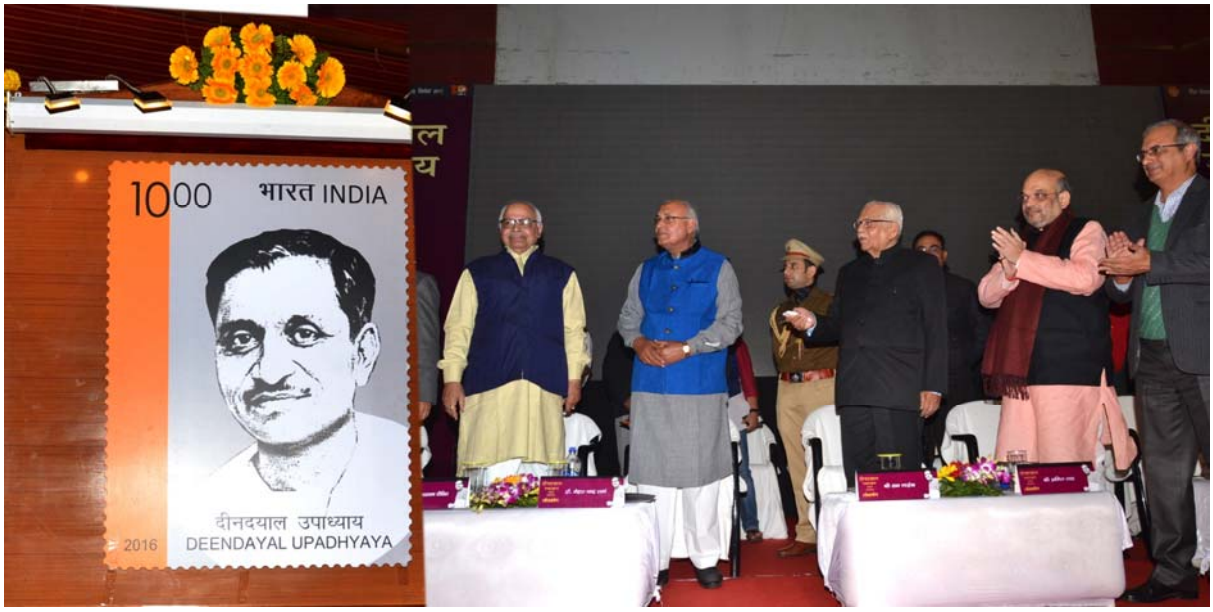
10 00
भारत INDIA
दीनदयाल उपाध्याय
DEENDAYAL UPADHYAYA
2016

संपूर्ण
वाङ्मय
लोकार्पण
दीनदयाल उपाध्याय
संपूर्ण वाङ्मय
लोकार्पण
अध्यक्षता : मा. श्री राम नाईक
मुख्य अतिथि : मा. श्री अमित भाई शाह
विशिष्ट अतिथि : श्रीमान हृदय नारायण दीक्षित

उपाध्याय
संपूर्ण
वाङ्मय
लोकार्पण
दीनदयाल उपाध्याय
संपूर्ण वाङ्मय
लोकार्पण
अध्यक्षता : मा. श्री राम नाईक
मुख्य अतिथि : मा. श्री अमित भाई शाह
विशिष्ट अतिथि : श्रीमान हृदय नारायण दीक्षित
गुरुवार, 29 दिसम्बर 2016
प्रभात प्रकाशन